November 2023

Monthly Magazine
Year 9 Issue 11

Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार

In Giving We Believe

सत्युग

हमारा उद्देश्य

"हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।"

बुधवार सतसंग

प्रत्येक बुधवार प्रात ११ बजे से ११.३० बजे तक

फेसबुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसबुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

|| नारायण नारायण ||

NRSP दीपावली स्नेह सम्मेलन

नारायण के आशीर्वाद से एनआरएसपी का प्रथम दीपावाली स्नेह सम्मेलन नारायण भवन में आयोजित किया जा रहा है। आप इस स्नेह सम्मेलन में सादर आमंत्रित हैं।

दिन 13 नवंबर 2023

समय शाम 5 बजे से 7 बजे तक

स्थान नारायण भवन टोपीवाला कम्पाउंड स्टेशन रोड़ गोरेगांव वेस्ट मुंबई

आप भी आएँ और अपने मित्रों और परिजनों को भी साथ लाएँ।

।। 卐 ।।

पावन वाणी

प्रिय नारायण प्रेमियों,

।।नारायण नारायण।।

तुलसी विवाह की हार्दिक शुभकामनाएँ। जब मुझे यह ज्ञात हुआ कि हमारी सतयुग टीम इस बार विवाह संबंध पर कार्य कर रही है तो दिल की गहराइयों में एक सुकून सा महसूस हुआ क्योंकि मेरा मानना है कि यह एक ऐसा संबंध है जिसको यदि ईमानदारी,वफ़ादारी से जी लिया तो बाक़ी सभी संबंधों को आसानी से बेहतर बनाया जा सकता है,जीवन को सप्त सितारा बनाया जा सकता है। विवाह के लिए सभी आवश्यक तथ्यों के बारे में आप इस अंक के विभिन्न स्तंभों से जानेंगे लेकिन मैं एक महत्वपूर्ण तथ्य के बारे में आपसे बात करना चाहती हूँ, वह है ईमानदारी, वफ़ादारी।

वफ़ादारी और ईमानदारी का तात्पर्य है विचार, वाणी, व्यवहार से अपने पार्टनर के प्रति पूर्ण समर्पित रहना। उसकी आदतों, उसकी विशेषताओं को जैसा है वैसा स्वीकार करना। उसको बदलने की कोशिश करने की बजाय स्वयं को उसके अनुकूल बनाने के लिए प्रयत्नशील रहना। दृढ़ चरित्र का स्वामी या स्वामिनी बन एक आदर्श प्रस्तुत करना क्योंकि आप एक आने वाली पीढ़ी के जनक हैं।

अपने पार्टनर के प्रति ईमानदारी और वफ़ादारी आपको चारित्रिक दृढ़ता के आधार पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता से भरे सप्त सितारा जीवन का हक़दार बना देती है।

विवाह संबंध की नींव है - विश्वास। उसे बनायें रखें और एक शानदार जीवन के हक़दार बनें। शेष कुशल

R. Modi

-: संपादिका :-

संध्या गुप्ता

09820122502

-: प्रधान कार्यालय :-

नारायण भवन
टोपीवाला कंपाउंड, स्टेशन रोड़
गोरेगांव वेस्ट, मुंबई

-: क्षेत्रीय कार्यालय :-

अहमदाबाद	जैविनी शाह	9712945552
अकोला	शोभा अग्रवाल	9423102461
अकोला	रिया अग्रवाल	9075322783
अमरावती	तरुलता अग्रवाल	9422855590
औरंगाबाद	माधुरी धानुका	7040666999
बैंगलोर	कनिष्का पोद्दार	7045724921
बैंगलोर	शुभांगीं अग्रवाल	9327784837
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	9341402211
बस्ती	पूनम गाड़िया	9839582411
बिहार	पूनम दूधानी	9431160611
भीलवाड़ा	रेखा चौधरी	8947036241
भोपाल	रेनू गट्टानी	9826377979
चेन्नई	निर्मला चौधरी	9380111170
दिल्ली (नोएडा)	तरुण चण्डक	9560338327
दिल्ली (नोएडा)	मेघा गुप्ता	9968696600
दिल्ली (डब्ल्यू)	रेनु विज	9899277422
धुलिया	रेणु भटवाल	878571680
गोंदिया	राधिका अग्रवाल	9326811588
गोहटी	सरला लाहोटी	9435042637
हैदराबाद	स्नेहलता केडिया	9247819681
इंदौर	धनश्री शिरालकर	9324799502
जालना	रजनी अग्रवाल	8888882666
जलगांव	काला अग्रवाल	9325038277
जयपुर	प्रीति शर्मा	9461046537
जयपुर	सुनीता शर्मा	8949357310
जयपुर	सुनीता शर्मा	8949357310
झुनझुनू	पुष्पा देवी टिबेरेवाल	9694966254
इचलकरंजी	जय प्रकाश गोयनका	9422043578
कोल्हापुर	राधिका कुमटेकर	9518980632
कोलकत्ता	स्वेटा केडिया	9831543533
कानपुर	नीलम अग्रवाल	9956359597
लातूर	ज्योति भूतड़ा	9657656991
मालेगांव	रेखा गारोडिया	9595659042
मालेगांव	आरती चौधरी	9673519641
मालेगांव	आरती दी	9518995867
मोरबी	कल्पना चोरौड़िया	8469927279
नागपुर	सुधा अग्रवाल	9373101818
नांदेड़	चंदा काबरा	9422415436
नवलगढ़	ममता सिंग्रोडिया	9460844144
नासिक	सुनीता अग्रवाल	9892344435
पुणे	आभा चौधरी	9373161261
पटना	अरबिंद कुमार	9422126725
पुरुलिया	मृदु राठी	9434012619
परतवाड़ा	राखी मनीष अग्रवाल	9763263911
रायपुर	अदिति अग्रवाल	7898588999
रांची	आनंद चौधरी	9431115477
सूरत	रंजना अग्रवाल	9328199171
सांगली	हेमा मंत्री	9403571677
सिकर (राजस्थान)	सुषमा अग्रवाल	9320066700
श्री गंगानगर	मधु त्रिवेदी	9468881560
सतारा	नीलम कदम	9923557133
शोलापुर	सुवर्णा बलदवा	9561414443
सिलीगुड़ी	आकांक्षा मुधरा	9564025556
टाटा नगर	उमा अग्रवाल	9642556770
राउरकेला	उमा अग्रवाल	9776890000
उदयपुर	गुणवंती गोयल	9223563020
उबली	पल्लवी मलानी	9901382572
वाराणसी	अनीता भालोटिया	9918388543
विजयवाड़ा	किरण झँवर	9703933740
वर्धा	रूपा सिंघानिया	9833538222
विशाखापतनम	मंजू गुप्ता	9848936660

अंतर्राष्ट्रीय केंद्र का नाम

ऑस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
दुबई	विमला पोद्दार	+971528371106
काठमांडू	रिचा केडिया	+977985-1132261
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
शारजाह	शिल्पा मंजरे	+971501752655
बैंकॉक	गायत्री अग्रवाल	66952479920
विराटनगर	मंजू अग्रवाल	+977980-2792005
विराटनगर	वंदना गोयल	+977984-2377821

।। 卐 ।।

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

।। नारायण नारायण ।।

नवम्बर का महीना आते ही विवाह समारोहों की बाढ़ सी आ जाती है। जगह - जगह विवाह उत्सव की शहनाइयाँ गूंजने लगती हैं। एक नये रिश्ते की शुरुआत होती है जो होती दो व्यक्तियों के बीच में है पर उससे पूरा परिवार, पूरा समाज प्रभावित होता है । विवाह का बंधन क्या है ? कैसा होता है ? इसे कैसे बेहतर तरीक़े से निभाना चाहिए इस बाबत टीम सतयुग ने अपने विचार और भाव पाठकों तक पहुँचाने के लिए सतयुग के इस अंक को चुना है। विवाह के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत जानकारी के साथ पेश है सतयुग पत्रिका का यह अंक ।

आप सब अपने वैवाहिक संबंधों को सर्वोत्तम तरीक़े से जीते हुए सप्त सितारा जीवन जीते रहें इन शुभकामनाओं के साथ,

आपकी अपनी

संध्या गुप्ता

अंतरर्राष्ट्रीय कार्यालय :

नेपाल	रिचा केडिया	977985-1132261
आस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
बैंकाक	गायत्री अग्रवाल	66897604198
कनाडा	पूजा आनंद	14168547020
दुबई	विमला पोद्दार	971528371106
शारजहा	शिल्पा मांजरे	971501752655
जकार्ता	अपेक्षा जोगनी	9324889800
लन्दन	सी.ए. अक्षता अग्रवाल	447828015548
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
डबलिनओहियो अमेरिका	स्नेह नारायण अग्रवाल	1-614-787-3341

आपके विचार सकारात्मक सोच पर आधारित आपके लेख, काव्य संग्रह आमंत्रित है - सतयुग को साकार करने के लिये/आपके विचार हमारे लिये मूल्यवान हैं । आप हमारी कोशिश को आगे बढ़ाने में हमारी मदद कर सकते है । अपने विचार उदगार, काव्य लेखन हमें पत्र द्वारा, ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं ।
हमारा ई-मेल है 2014satyug@gmail.com

we are on net
narayanreikisatsangparivar @narayanreiki

प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.
Call : 022-67847777

सतयुग का शंखनाद

नारायण रेकी सतसंग परिवार संबंधों की घनिष्ठता पर बल देता है । विवाह एक ऐसा संबंध है जो सभी आपसी संबंधों का आधार है । विवाह में एक स्त्री और एक पुरुष आजीवन साथ रहकर समझदारी, साझेदारी, प्यार, आदर, सम्मान, और परवाह से भरकर एक दूसरे के साथ रहते हैं और अपनी संतति को आगे बढ़ाते हैं, अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाते हैं और समाज को उन्नत करते हैं ।

भारतीय शास्त्रों के अनुसार विवाह एक पवित्र बंधन है जिसे दो आत्माओं का मिलन और सात जन्मों का बंधन माना गया है । एक ऐसा आत्मिक बंधन जो आपको सहभागिता, सुरक्षा, प्यार, आदर, सम्मान, के गुणों से भरपूर करता है ।

विवाह सिर्फ़ एक पुरुष और एक स्त्री के बीच का रिश्ता नहीं है, यह दो परिवारों, दो संस्कृति, दो सभ्यता के बीच का बंधन है जहां दो परिवार साथ साथ चलते हुए उन्नति और विकास के रास्ते पर आगे बढ़ते हैं ।

नारायण रेकी सतसंग परिवार के सिद्दांत विवाह संस्था को सर्वोत्तम तरीक़े से जीना सिखाने का उत्कृष्ट माध्यम हैं।

विवाह, जिसे शादी कहा जाता है, एक सामाजिक और सांस्कृतिक संबंध है जिसमें दो व्यक्ति एक दूसरे से जुड़कर जीवन को साझा करते हैं। यह एक गहरा और स्थायी रिश्ता होता है जो प्रेम, समर्पण, और साझेदारी पर आधारित होता है।

एक सफल और सार्थक विवाह संबंध के लिए सबसे अधिक आवश्यकता होती है समर्पण के भाव की । जब दोनों पार्टनर एक दूसरे को एक दूसरे के परिवार को अपना सर्वोत्तम देने के भाव से भरे होते हैं तो विवाह एक बहुत ही खूबसूरत सा एहसास बन जाता है । तब मैं नहीं हम और हमारा परिवार महत्वपूर्ण हो जाता है । विवाह की सफलता के लिए आवश्यक है कि हम सबसे पहले स्वयं को इस भाव से भरें, 'मेरा पार्टनर सर्वोत्तम है'। आपका पार्टनर जैसा है उसको उनकी उन्हीं विशेषताओं के साथ स्वीकारें ।

पति अपनी पत्नी को प्रतिदिन यह लवली मंत्र कहें, ' मेरे जीवन में आने के लिए आपका धन्यवाद है ।आप लक्ष्मी स्वरूपा हैं, आप मेरे घर की अन्नपूर्णा हैं, आप सरस्वती जी का रूप हैं आपकी वजह से मैं एक समृद्धशाली, वैभवशाली और एक शानदार,जानदार सफलताओं से भरा जीवन जी रहा हूँ। ' इसके साथ ही जो आज आपको हासिल है उसके लिए आभार करें और आप जो आगे पाना चाहते हैं वो भी शामिल करें । अपनी पूरी बात कहने के बाद यह लवली मंत्र कहें, 'आई लव यू, आई लाइक यू, आई रिस्पेक्ट यू , नारायण ब्लेस यू'। इसी तरह पत्नी भी अपने पति को प्रतिदिन कहें, ' मेरे जीवन में आने के लिए आपका धन्यवाद है आपकी वजह से मैं सातों सुखों से परिपूर्ण जीवन जी रही हूँ, बरकत, बढ़ोत्तरी, प्रचुरता से भरा जीवन जी रही हूँ । आई लव यू, आई लाइक यू, आई रिस्पेक्ट यू, नारायण ब्लेस यू। पति की जो ख़ासियत है उसे भी बोलें आपकी अमुक विशेषता के कारण मेरा जीवन इतना सुंदर बना हुआ है ।जब दोनों पार्टनर इस तरह के सुंदर और स्वस्थ सकारात्मक वाक्य एक दूसरे से कहते हैं तो जीवन को सप्त सितारा बनने में समय नहीं लगता। अपने पार्टनर को बदलने के बजाय स्वयं को उसके अनुरूप बनाने का प्रयत्न करें । एक दूसरे के विचारों, भावों को समझें और उनके अनुरूप उन्हें रहने दें । याद रखें विवाह में शामिल दोनों व्यक्ति, दोनों परिवारों का अपना एक व्यक्तित्व है, अपनी आदतें हैं, अपने संस्कार हैं, अपना ख़ान

पान है, जो एक दूसरे से अलग हो सकता है। उसका सम्मान करें और एक दूसरे के साथ सीखें । यदि अपने कुछ संस्कारों को आदतों को बदलना पड़े तो बदलें एडजस्टमेंट समझकर नहीं, ' मैं कुछ नया सीख रहा हूं/सीख रही हूं इस भाव के साथ । विचार, वाणी, व्यवहार को सकारात्मक रखें क्योंकि यह आपकी नैतिक ज़िम्मेदारी है क्योंकि अब आप एक नई पीढ़ी को जन्म देकर परिवार को, समाज को आगे बढ़ा रहे हैं ।

यदि कभी आपके मन के विपरीत हो तो नारायण का धन्यवाद करें कि नारायण ने आपको विपरीतता में अनुकूलता ढूँढने के लायक़ बना कर आपके सामने यह परिस्थिति प्रस्तुत की है। ऐसे समय में, आई कैन मैनेज, आई कैन हैंडल, आई कैन अफोर्ड के अपने मूल मंत्र को याद रखें । अपने सास ससुर, को अपने माता पिता का दर्जा दें । उनका उसी तरह सम्मान करें, उसी तरह उनकी देखभाल करें जिस तरह आप अपने माता पिता की करते हैं । हमारे सास ससुर इस धरती पर साक्षात् ईश्वर का अवतार हैं । हम भले ही पूजा पाठ करें या न करें मगर अपने सास ससुर के साथ प्रेम पूर्वक व्यवहार करते हैं, उनकी ज़रूरतों का ध्यान रखते हैं, उनकी देखभाल करते हैं तो हम सर्वोत्तम पूजा फल के हक़दार हो जाते हैं ।

सम्मान विवाह संबंध को बांधे रखने की एक मज़बूत कड़ी है। हमेशा एक दूसरे का सम्मान करें । आपसी रिश्तों में कभी भी अहम को आगे न आने दें क्योंकि आपके पार्टनर का सम्मान आपका सम्मान है और पार्टनर का अपमान आपका अपमान।

कभी कभी घर परिवार में ऐसा होगा कि आपके ऊपर ज़्यादा ज़िम्मेदारियां हैं , उस समय खीजने या क्रोध करने के बजाय आभार व्यक्त करें कि आप इस लायक़ हैं कि आप सभी ज़िम्मेदारियों को अच्छे से निभा पाते हैं जिस कारण परिवार के सभी सदस्यों का जीवन आसान हो जाता है । विवाह संबंध में दोनों पार्टनर अलग - अलग घरों से आते हैं। उनका खान पान , रहन सहन, रीति रिवाज, अलग हो सकते हैं । आपसी मन मुटाव होने पर बातों को पकड़कर न रखें। इस बात को समझें कि सभी की अपनी अपनी सोच है। आप दोनों वर्षों तक अलग- अलग माहौल में रहे हैं ऐसे में विचारों की भिन्नता होना स्वाभाविक है । विचारों की भिन्नता पर बैठकर बात करें, आपसी समझ से भिन्नताओं को दूर करने की कोशिश करें, आपस में एक दूसरे को कहें, ' थोड़ा तुम चलो, थोड़ा हम चलें पर साथ - साथ चलें ।

मैं से ऊपर उठकर हम की परिकल्पना पर चलें । मैं अकेला होता है पर हम हमेशा बहुतों से घिरा होता है । हम का भाव सुरक्षा का भाव, स्नेह का भाव लाता है, आपको और आपके पार्टनर को यह एहसास दिलाता है कि हम एक हैं और एक साथ सुख और दुःख को बाँट लेंगें । एक दूसरे के प्रति समर्पित रहें और एक दूसरे के साथ हर चीज साझा करें। आपकी यह आदत आपको जीवन के हर कदम पर मदद करेगी ।

विकास के इस दौर में आज पत्नियाँ भी घर से बाहर जाकर कार्य करने लगी हैं । ऐसे में दोनों पार्टनर के साथ साथ घर के सदस्यों की भी ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है। जितना हो एक दूसरे का सहयोग करें, मिलजुल कर कार्य करें, एक दूसरे पर दोषारोपण न करें । क्रोध और शिकायत से बचें । प्रेम भाव से भरकर मिलजुल कर अपने विवाह को स्वस्थ, सुरक्षित और खुशहाल रखें । विवाह एक नए जीवन की शुरुआत का एक अद्वितीय और खास पल होता है। यह दो अजनबी जीवनों को एक साथ बाँधता है और उन्हें जीवन के सभी रंगों में साथ चलने का मौका देता है। इसमें प्रेम, समर्पण और साझेदारी होने के कारण ही विवाह एक संपूर्ण और समृद्धि भरा रिश्ता है।

विवाह संबंध सभी घनिष्ठ संबंधों की आधारशिला है । विवाह संबंधों को सर्वोत्तम बनाने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना अति आवश्यक है । ऐसी ही कुछ बातें दीदी के मनपसंद पात्रों के माध्यम से ?

श्रीमती सुधा मूर्ति

श्रीमती मूर्ति जी लिखती हैं कि एक दिन की बात है, मैं अपने परिवार के साथ एक पारिवारिक शादी में गयी थी। वहाँ पर मैं एक लंबे अरसे के बाद अपने परिवार के सदस्यों से, दोस्तों से, परिचितों से मिली। हम सब ग्रुप बनाकर बैठ गए। हम सभी समाज सेवा, परोपकार और हमारे देश के लिए कुछ करना है, इस विषय पर बात करने लगे। किसी ने कहा समाजसेवा वही व्यक्ति कर सकता है जिसके पास ढेर सारा समय हो और बहुत सारा धन हो और उस पर घर की विशेष ज़िम्मेदारी न हो और उसका कोई शौक ही न हो, वही व्यक्ति समाज सेवा कर सकता है। किसी ने कहा कि समाज सेवा करना यानी कि पिछले जन्म का कर्ज उतारना।

आगे श्रीमती मूर्ति जी ने बहुत सुन्दर बात लिखी कि मेरे भीतर यह प्रबल भाव है कि जो मेरे परिवार के सदस्य हैं, दोस्त हैं, उनका इंटेंशन कभी भी गलत नहीं होता है। इसलिए मैं कभी भी उनकी बातों से न तो हर्ट होती हूँ न ही अपसेट।

श्रीमती मूर्ति जी ने आगे कहा कि समाज सेवा की मेरी लंबी यात्रा में मैंने कई एलबम फुटेज देखे हैं कि उनकी खुद की परिस्थितियां चाहे कैसी भी क्यों न हो, लेकिन समाजसेवी हमेशा दूसरों की मदद करने के लिए तैयार रहते हैं।

'चेन्नई समाज सेवा संस्था' में कई लोग ऐसे थे जो बेहद गरीब थे, कई मध्यम वर्गीय थे और हां कई अमीर लोग भी थे जो समाज सेवा में लगे हुए थे। श्रीमती मूर्ति जी ने आगे लिखा कि समाज सेवा करने के लिए समय और धन तो चाहिए ही पर सबसे अति आवश्यक चीज जो है वह है समाज सेवा करने का भाव और इच्छा। लोगों के कहने पर श्रीमती मूर्ति ने कुछ उदाहरण दिए –

उदाहरण १ : आप सभी 'बदामी रेलवे स्टेशन तो गये ही होंगे, जो कि टाउन में है।' रास्ते के दोनों ओर बड़े – बड़े नीम के घने वृक्ष हैं। बरसों पहले की बात है, एक साधारण व्यक्ति को अपने देश के लिए, समाज के लिए कुछ करना था। चूँकि उनमें सामर्थ्य नहीं था, वे छोटे – छोटे नीम के पौधे लेकर आए और स्टेशन के नजदीक, रास्ते के दोनों ओर रोप दिए। उन दिनों ग्लोबल वॉर्मिंग की समस्या थी, बरसात जमकर बरसती थी। उन नीम के छोटे – छोटे पौधों ने घने वृक्ष का रूप ले लिया और आज आते – जाते लोगों को ठंडी छांव दे रहा है और किसी को भी उस व्यक्ति का नाम तक नहीं पता। आगे लिखती हैं श्रीमती मूर्ति जी, मैंने अपने ग्रुप से पूछा, क्या यह चैरिटी नहीं

है .. क्या यह समाज सेवा नहीं है..? मेरे पूछने पर कुछ लोगों ने हां में गर्दन हिलाई।

उदाहरण २: करीब ३१साल पहले विदेश में सेटल्ड डॉ श्रीधर अपना बसा बसाया काम छोड़कर अपने शहर बैंगलोर में वापस आ गए और दो कमरों के भाड़े के मकान में अपने परिवार के साथ रहने लगे। उनकी दिनचर्या यह थी कि वे शाम को ४ से ६ अपनी डिस्पेंसरी खोलते थे और किसी भी मरीज़ से इलाज के पैसे नहीं लेते थे। श्रीमती मूर्ति जी आगे लिखती हैं, एक दिन मैंने उनसे पूछा कि आप यह सब मैनेज कैसे कर लेते हैं और आप विदेश में ही क्यों नहीं रुक गए। इस पर डॉक्टर श्रीधर ने कहा कि उनका बहुत पहले से ही यह सपना था कि समाज को कुछ लौटाऊं। मेरे बच्चों ने मुझे प्रोत्साहित किया इसलिए मैं अपना सपना पूरा कर पाया। श्रीमती मूर्ति जी ने कहा कि समाज सेवा करने के लिए परिवार का सहयोग बहुत ज़रूरी है।

राज दीदी ने कहा कि ब्रह्मांड हमारी विश पूरी करता है

ब्रह्मांड के लिए छोटी या बड़ी wishes में कोई फर्क नहीं होता। ब्रह्मांड को तो सिर्फ तथास्तु कहना है। जो प्रार्थना आप अपनी छोटी इच्छा के लिए कर रहे थे, वही प्रार्थना आप आपकी बड़ी इच्छा के लिए भी करेंगे। हो सकता है कि थोड़ी तादाद आपको बढ़ानी होगी। जब आपकी इच्छा छोटी होती है तो आपके भीतर यह भाव रहता है कि छोटी सी इच्छा है मेरी, मैं प्रार्थना करूँगी तो मुझे पता है कि मेरी यह इच्छा झट पूरी होने वाली है। वो प्रबल भाव ही उस इच्छा पूरी करने में मदद करता है, साथ में आपकी प्रार्थनाएं भी काम आती हैं।

अब प्रश्न आता है कि हमारी बड़ी wish क्यों नहीं पूरी होती। राज दीदी ने कहा कि आपकी बड़ी wish के लिए आप बहुत अधिक प्रार्थनाएँ करते हैं। जब जब भी आप प्रार्थना करते हैं और Affirmations देते हैं, वो इच्छा आपके नज़दीक आती चली जाती है। वाणी से आप पांच बार positive affirmations देते हैं। आप जितनी बार affirmations देते हैं उतनी बार वह ब्रह्मांड के पास जमा हो जाती है। आपने positive affirmations दिया और अधिक मात्रा में प्रार्थना भी की। जो भी अपनी प्राथमिक इच्छा के लिए प्रार्थना कर रहा है, यह विशेष ध्यान रखें कि हम अपनी वाणी से प्रार्थना करते हैं। वाणी से यदि हमने किसी को ताना मार दिया, किसी की निंदा कर दी, किसी पर दोषारोपण कर दिया, किसी को चार बातें सुना दी, आप यदि इसमें से कोई भी हरकत करते हैं तो आपकी इच्छा आपसे कोसों दूर चली जाती है। आपको वापस प्रेयर करनी पड़ती है। आपने किसी के पीठ पीछे उस पर दोषारोपण किया और उसकी निंदा करी, प्रकृति के लिए यह तो फिर भी चल जाएगा। लेकिन आपने किसी को ताना मारा और उसे सुना दिया, उसको छलनी – छलनी कर दिया, उसकी आंखों में आंसू ला दिए, उसको Hurt कर दिया तो ब्रह्मांड तुरंत उस बात को पकड़ लेता है, नहीं छोड़ता। तुमने उसे दुःख दिया है अब तुम्हें झेलना तो होगा, अब करो प्रार्थना।

आपको क्या सावधानी रखनी होगी ताकि आपकी एक बड़ी इच्छा पूरी हो जाए।

राज दीदी ने आगे कहा कि आप जब एकादशी का व्रत करते हैं, अनाज नहीं खाते, परहेज करते हो। राज दीदी ने उदाहरण देते हुए कहा कि मुझे बहुत अच्छे से याद है, बचपन में संतोषी माता का व्रत बहुत अधिक चला करता था। उसमें एक नियम यह था कि जब कोई व्रत करे तो खटाई आपको नहीं खानी होती थी। महिलाएं व्रत के दिन खटाई ना ही खाती और ना ही छूती।

राज दीदी ने कहा कि यदि आपको आपकी इच्छा पूरी करनी है तो आपको निंदा, चुगली, बुराई, ईर्ष्या, द्वेष इन सभी से परहेज करना होगा।

जिस वाणी से आप affirmations देते हैं, जप करते हैं, उस वाणी से यदि आपने राई के दाने जितना भी नेगेटिव कर्म कर दिया तो ब्रह्मांड आपकी प्राथमिक इच्छा को आपसे कोसों दूर कर देगा। ये चीजें अपनी जिह्वा से एकदम हटा दीजिये, एकदम साफ कर दीजिए, जैसे एकादशी में आप अनाज को अपने से दूर रखते हैं। रसोई का सारा काम हो जाने के बाद एकादशी का भोजन बनता है कि कहीं अनाज का हाथ उसमें न लग जाए।

आपकी बड़ी इच्छा क्यों नहीं पूरी हुई, 'मुझसे यह काम हुआ है क्या.?' हम बहुत आसानी से कह देते हैं कि हमने सामने वाले को सुना दिया। आपको क्षणिक खुशी मिली और आपने सुना दिया, पर आपको यह एहसास नहीं होता कि क्षणिक खुशी तो मिली पर यह बड़ी खुशी, आपकी विश आपसे कोसों दूर चली गई, तो इस बात पर आपको अधिक से अधिक focus करना होगा।

अपनी इच्छा को जल्द से जल्द पूरा करने का सहज और सरल उपायः -

ऐसे में सर्वकल्याण के लिए अपनी इच्छाओं को पूरा करने का आसान तरीक़ा :- राम नाम लेखनी पुस्तिका लें जो हमारे कार्यालय से आसानी से और बहुत ही कम दामों में प्राप्त की जा सकती है ।यदि यह पुस्तिका आपके पास नहीं है तो आप कोई भी साधारण पुस्तिका ले लें। एक आधे घंटे का नियम लें कि मैं अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए रात को सोने से पहले राम -नाम लिखने की प्रक्रिया इस पुस्तिका में करूँगा /करूँगी । अब सोने के ठीक पहले अपनी इच्छा बोलते जाएं और राम राम लिखते जाएं लिखना पूरा होने के बाद सो जाएं । न किसी से बात करें न फ़ोन चेक करें।

युवा मंच

विवाह का प्यारा सा बंधन - हमारी संस्कृति में उसका महत्व

अग्नि के चारों ओर सात फेरे लेकर आजीवन साथ निभाने का, प्रेम से परिपूर्ण बंधन है, विवाह का पवित्र बंधन। हिंदू धर्म में अग्नि को पवित्र माना गया है और एक स्त्री व पुरुष को दाम्पत्य में बांधने के लिए और सात वचन भर कर सात फेरे लेने के लिए अग्नि से बड़ा साक्षी और कौन होगा।

विवाह का मूल उद्देश्य विवाहित जीवन में स्थिरता, सम्बंधों की गहराई, साझा जीवन का आनंद और परिवार का विकास है। यह एक सामाजिक संस्कार है जिसका मतलब होता है दो अभिभावकों के संयोग से दो व्यक्तियों के बीच एक स्थायी सम्बन्ध स्थापित करना। विवाह से दो व्यक्तियों को एक साथी के रूप में एकता की अनुभूति होती है।

विवाह वह आधार है जो घर बसाता है और बच्चों के पालन पोषण तथा आर्थिक सहकारिता व सामाजिक उत्तरदायित्वों की नींव को बनाता है । सामाजिक दृष्टिकोण से विवाह का तात्पर्य बच्चों को जन्म देना तथा समाज की निरन्तरता को कायम रखना है। हिन्दू विवाह एक धार्मिक संस्कार है।

उपरोक्त कथन से सभी युवा भारत की इस महान परंपरा से व उसके महत्व से अवगत हो गये होंगे। विवाह से पूर्व आपको पूरा अधिकार है कि एक दूसरे के बारे में भली भाँति जान लें पर एक बार आप इस बंधन में बंध गये तब एक दूसरे के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित रहिए । विवाह के समय लिये गये सात वचनों का अक्षरशः पालन करिए । एक दूसरे की कमियों को स्वीकार कर एक दूसरे की ताक़त बनिये।

यह बंधन एकमात्र ऐसा बंधन है जहाँ आप एक दूसरे के लिए अनेकों भूमिकाएँ निभाते हैं । कभी एक स्त्री पत्नी के रूप में अपना तन मन पति पर निछावर करती है, कभी माँ जैसे लाड़ प्यार करते हुए पति के सभी मनोभाव समझती है, कभी बहन जैसे झगड़ती है, कभी बेटी जैसे अपनी बात मनवाती है और कभी एक चिर मित्र की भाँति पति के हर सुख दुःख बाँटती है।

इधर एक पुरुष भी पति बन कर एक स्त्री को अपने जीवन के सर्व अधिकार सौंप देता है, कभी पिता सा लाड़ दुलार करता है, कभी भाई जैसे पत्नी की ढाल बन कर सुरक्षा करता है, कभी एक सच्चे दोस्त की तरह मन की हर बात साझा करता है।

आजकल देखा जा रहा है कि पति पत्नी अपने किरदार को ईमानदारी से नहीं निभा रहे हैं, कई बच्चे तो विवाह के बंधन में बंधना ही नहीं चाहते और अगर बंध भी जायें तो अपने अहम् के चलते डाइवोर्स तक पहुँच जाते हैं। डाइवोर्स या तलाक़ जैसा शब्द हिंदू संस्कृति में रचा ही नहीं गया है। अपनी संस्कृति सिखाती है समर्पण, साहचर्य, सहयोग व सात जन्मों का साथ। इसी जन्म में आपके सातों जन्म होते हैं अर्थात् अनेक परिस्थितियों का मिलकर सामना करना। अपनी संस्कृति के इस धार्मिक संस्कार को चिरायु करें और गौरवशाली बनायें।

||नारायण नारायण||

बच्चों की फुलवारी

इस बार टीम सतयुग ने जिस मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करने का फैसला किया वह है विवाह और संस्कृति।

यहां बच्चों के डेस्क में हम बताएंगे कि हमारी संस्कृति के बारे में जानना कितना महत्वपूर्ण है।

हमारी संस्कृति हमारे जीवंत समाज की धड़कन है। यह हमारे मूल गुण हैं जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमें हस्तांतरित होते हैं, जो हमारे वास्तविक स्वरूप को परिभाषित करते हैं। यह हमारी विशिष्ट पहचान है। संस्कृति हमारे इतिहास और सभी पीढ़ियों की सामूहिक उपलब्धियों और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करती है। जब हम संस्कृति की बात करते हैं तो यह समुदाय और एकता की भावना को बढ़ावा देती है और हमें वसुदेव कुटुंब का हिस्सा होने का एहसास कराती है।

यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हमें पीढ़ियों से चली आ रही परंपराओं और रीति-रिवाजों को जीवित रखते हुए और उनका पालन करते हुए अपनी संस्कृति को समझना और संरक्षित करना है।

हाँ, हर पीढ़ी की अपनी व्यक्तिगत धारणाएँ होती हैं। हम जिन परंपराओं का पालन करते हैं उनमें चीजों को आसान और सुंदर बनाने के लिए उन्हें शामिल कर सकते हैं।

पारंपरिक उथल-पुथल का एक उदाहरण दिवाली स्नेह मिलन है, जिसका अनुसरण सभी समाजों द्वारा किया जाता है, जिसमें सभी एक-दूसरे को शुभकामनाएं देने के लिए एक मंच पर मिलते हैं। पहले दिवाली के दौरान लोगों से मिलने जाने का चलन था। इस तरह हम सभी प्रियजनों से जुड़ते हैं और आज की तेजी से बढ़ती मल्टी टास्किंग संस्कृति में, यह एक शानदार विचार है।

सिर्फ दिवाली ही नहीं बल्कि आजकल कई त्योहार इसी अंदाज में मनाए जाते हैं जिनमें संस्कृति अगली पीढ़ी से मिलती है।

आज के बच्चों और युवाओं में यदि क्यों कारक का संतोषजनक उत्तर दिया जाता है तो वे परंपराओं का पालन करने और पीढ़ियों से चली आ रही संस्कृति को अपनाने के लिए तैयार रहते हैं। आर्ट ऑफ लिविंग, ईशा योग और एनआरएसपी जैसे कई आध्यात्मिक संगठन अगली पीढ़ी को पुरानी संस्कृतियों के साथ मिलाने की दिशा में काम कर रहे हैं, जिससे हमारी सांस्कृतिक जड़ें मजबूत हो रही हैं।

हमारी शादियों में रीति-रिवाजों का भी बहुत महत्व होता है। हिंदू संस्कृति में विवाह दो परिवारों का मिलन है, जिससे संबंध और रिश्ते मजबूत होते हैं।

एनआरएसपी में हम बच्चों और युवाओं दोनों को हमारी इन्हीं सारी धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के पीछे के रहस्यों के बारे में बताने का प्रयास करते हैं ताकि हम में से प्रत्येक जन में सांस्कृतिक वृद्धि हो और हमारे बच्चे विवाह जैसे पवित्र संबंध को सर्वोत्तम तरीक़े से समझ सकें।

दीदी के छाँव तले

दीदी के छाँव तले स्तंभ में सतसंगियों के उन अनुभवों को उन कन्फ़ेशंस को लिखा जाता है जो दीदी को सुनने के बाद उनके जीवन में परिवर्तन हुए: -

हमारे जीवन की परिस्थितियों हमारे द्वारा प्रयोग किए गये शब्दों का परिणाम हैं :-

जिन भी शब्दों का हम इस्तेमाल करते हैं वह ब्रह्मांड में जा कर अंकित हो जाते हैं और समय समय पर अपना असर दिखाते हैं। आँखें खोल देने वाला कनफेशन जिसे सुन कर कई सतसंगी यह जानेंगे कि जो शब्द हम अनायास ही या मज़ाक में कह देते हैं उनकी कीमत किस प्रकार तक चुकानी पड़ती है। यह कन्फेशन एक महिला का है, जो बताती हैं कि उनके मुंह में कैंसर है। कई सालों से इनके पति को गुटखा खाने की आदत थी, तब वे अपने पति को कहती थीं, आप यह खाना छोड़ दो नहीं तो आपको कैंसर हो जाएगा, और फिर आपसे मुझे हो जाएगा। परिणाम: आज स्वयं को मुंह का कैंसर हो गया है।

जब भी वे किसी शादी, पार्टी में जातीं थीं तब भूख से ज़्यादा भोजन प्लेट में भर लेती, जो बाद में व्यर्थ चला जाता था। परिणाम: मुंह का कैंसर होने के कारण उनके मुंह में छेद हो गया है, वे जो भी खाती हैं वह उस छेद से बाहर आ जाता है।

इनकी बड़ी बेटी एक स्पेशल चाइल्ड है, उससे परेशान हो कर वे कहती थीं, हम तीनों कुछ कर लेते हैं और बेटे को जेठ के पास छोड़ देते हैं। परिणाम: इनके स्वास्थ के कारण और बड़ी बेटी की नारायण स्पेशल चाइल्ड होने के कारण इनके बेटे को कभी ताऊ, कभी चाचा के घर छोड़ना पड़ रहा है।

इन्हें अपने परिवार के लोगों का इनके घर आना पसंद नहीं था। परिणाम: स्पेशल चाइल्ड बेटी सबको मारती है, इसकी वजह से कोई परिवार वाले चाह कर भी इनके घर नहीं आ पाते।

इनकी एक बुआ सास थीं जिनको कभी देवर, कभी जेठ के घर रखना तय हुआ था। जब भी बुआ सास इनके घर आतीं ये उन्हें हाथ पकड़ कर धूप में छोड़ दिया करती थी क्योंकि इनकी बेटी उन्हें मारती थी।

परिणाम: इनकी बेटी को भी सब एक घर से दूसरे घर छोड़ते रहते हैं।

देवरानी, जेठानी के साथ नकारात्मक बोला करतीं थीं। जवाब में वे भी उन्हें नकारात्मक शब्द बोलतीं थीं। परिणाम: देवरानी जेठानी को भी अपने कर्मों का फल इस रूप में मिल रहा है कि उन्हें इनकी स्पेशल चाइल्ड बच्ची को संभालना पड़ता है, डॉक्टर के पास ले जाना पड़ता है,बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है, इस प्रकार वे भी अपने कर्म भुगत रही हैं।

ये दूसरों की बहुत कमियां निकालती थीं और नकारात्मक बोल कर उन लोगों को बहुत हर्ट करतीं थीं। परिणाम: इनकी अस्वस्थता के कारण घर के सभी सदस्य दुःखी और परेशान हैं।

घर के जो भी हेल्पर्स हैं, उनके साथ उनका व्यवहार बहुत गलत था।

अपने सभी नकारात्मक कर्मों के लिए क्षमा प्रार्थी हैं।

शब्दों के प्रति जागृत रहें

१) हेल्पर को गुस्से में बोल दिया कि मैं मर जाऊंगी तब?

अब पंद्रह दिनों के भीतर ही स्वास्थ नारायण हेल्प हो गया है।

२)जेठुति का रिश्ता बहुत समय से तय नहीं हो रहा था, तो मैं यह सोचती थी, इस उम्र में तो रिश्ता नारायण हेल्प ही मिलेगा। परिणाम – जेठुती को तो बहुत ही अच्छा रिश्ता मिला है पर मेरी बेटी को नारायण हेल्प रिश्ता मिला है।

मैं इसके लिए क्षमा मांगती हूं।

सतसंग से समाज सेवा

छोटे से शहर में पार्लर चलाने वाली एक सतसंगी महिला ने यह बताया कि उन्होंने एक सुविधाओं से वंचित परिवार की बेटी को दुल्हन के रूप में तैयार किया, बदले में सिर्फ़ आशीर्वाद लिया, अन्य कुछ चार्ज नहीं किया।उन्होंने राज दीदी के सानिध्य में रह कर सीखा कि हर व्यक्ति में नारायण विराजमान हैं। सामर्थ्य अनुसार हर एक की तन, मन, धन से सहायता करना ही जीवन जीने का सही अंदाज़ है।

सतसंग से स्व सुधार

दीदी का वीडियो देखा, आपकी मुस्कान में भाग्य बदलने की क्षमता है। मेरी सास से मेरे रिश्ते नारायण हेल्प हैं। जब भी मैं यू एस से इंडिया आती थी तो २ घंटे से अधिक उनके पास नहीं रुकती क्योंकि तब तक बहुत कहा–सुनी हो जाती थी। इस बार राज दीदी के सतसंग की हर बात फॉलो करने की ठान चुकी मैं सदभावना के साथ वहां गई और चेहरे पर मुस्कान को काबिज़ रखा। इंडिया में फ्लाइट लैंड करते के साथ ही मैंने मन में सदभावना बनाए रखी और सभी को ब्लेसिंग्स देती गई। ससुराल में सभी ने प्रेम से बात की। २ की बजाय ४ घंटे उन लोगों के साथ बिताए। ससुर जी ने पहली बार कहा कि बेटा थोड़ी देर और रुक जाती। सासु मां ने भी अच्छे से बात की।

सतसंग और बाल विकास

सतसंग सुन कर ८ साल की दोहिती खाना बिल्कुल नहीं फेंकती। उतना ही लेती है जितना वह खा सके। शादी, पार्टी में यदि प्लेट में बच जाता है तो उसे पेपर नैपकिन में समेट लेती है और रास्ते में कुत्ते, बिल्ली को खिला देती है।

पिता का पत्र पुत्री के नाम

प्रिय पुत्री,

तू ससुराल में खुश होगी..!

सारा समाज करवाचौथ का त्यौहार मनाने जा रहा है और सभी सुहागन स्त्रियां अपने पति की लम्बी आयु के लिए व्रत रखेंगी।

तेरी शादी के बाद यह पहला करवाचौथ है और शायद तू भी अन्य औरतों की तरह व्रत रखेगी।

मेरे मन में इस विषय पर कुछ विचार आये सो तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ..

बेटी अगर तू भी ऐसा समझती है कि सिर्फ व्रत रखने से पति की उम्र लम्बी होगी तो तेरी सोच भी अन्य स्त्रियों की तरह ग़लत है।

अगर तुम सच में अपने पति की लम्बी उम्र की कामना करती हो तो ईश्वर से इसकी प्रार्थना करना तथा अपने लिए ईश्वर से माँगना कि ईश्वर तुम्हारी बुद्धि को हमेशा नेक,सत्य,धर्म व पवित्रता के मार्ग पर चलाए,तेरा मन कभी चंचलता में भटक न जाए।

अपने पति से हृदय से प्रीति करना। अगर उसकी लम्बी उम्र चाहती हो तो उसके मन को शांत रखना।

परिवार में सबसे मिलकर चलना, अपने सास ससुर की अलोचनाओं से पति के मन में कटुता मत भरना।

पति के मन अनुसार व जो उसे प्रिय हो ऐसा अपना आचरण और स्वभाव रखना।

उससे छिपा कर कोई ग़लत काम न करना ,लोगों में पति की बुराई न करना तथा निरादर न करना ,अगर कहीं मन मुटाव हो तो उसे आपस में ही सुलझा लेना।

पति से छिप कर कोई भोग पदार्थ न लेना, परिवार में कोई समस्या आये तो मिल जुलकर हल करना..वरना आपस में अविश्वास पैदा होगा और झगड़ा होगा तथा तुम दोनों का जीवन सुखमय नहीं रहेगा और तुम दोनों का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहेगा तब लम्बी उम्र पाने की सोच व्यर्थ होगी।

बेटी, अपने स्वभाव को हमेशा शान्त रखना, तुम अपने शातँ भाव से बड़ी से बड़ी मुश्किल घड़ी को सरलता से सुलझा लोगी।

कभी भी अपना धैर्य मत खोना। तेरी दृष्टि, तेरी वाणी ,तेरा आचरण पति के अनुकूल और उसे प्रिय होना चाहिए।

॥ 卐 ॥

पति को ही अपना स्वामी, पालन करने वाला मानना उसके अलावा किसी अन्य से प्रीति भाव न रखना ।

मेरी इन शिक्षाओं पर निश्चय से चलना ही असली व्रत है।

अगर तू मेरी इन बातों को मन में रख कर व्यवहार में लाएगी तो तेरा पति तेरे से हमेशा प्रसन्न रहेगा तथा उसके प्रसन्न रहने से उसका स्वास्थ्य अच्छा होगा व आयु भी लम्बी होगी ।

पति के प्रसन्न रहने से घर में धन लक्ष्मी व समृद्धि आयेगी और ऐश्वर्य,सौभाग्य ,सुसन्तान की वृद्धि होगी ।

इस तरह तुम अपने पति के साथ वृद्धा अवस्था तक प्रसन्न चित्त ,स्वस्थ जीवन को आनंद से व्यतीत करोगी ।

व्रत स्वास्थ्य के लिय अच्छा है लेकिन अगर कोई सोचे कि सिर्फ व्रत से ही पति की उम्र लम्बी होगी यह बिल्कुल ग़लत सोच है ।

पति की उम्र तो जैसे मैंने ऊपर लिखा है; उसी अनुसार आचरण करने से होगी । मुझे आशा है तू मेरी बातों पर अमल करेगी।

सदैव खुश रहो..!

तुम्हारा पिता

करवा चौथ की हार्दिक शुभकामनाएं।

अभिवादन....

गांव में सब उनकी इज्ज़त करते हैं छोटे से लेकर बड़े बुजुर्ग तक ....नाम है उनका बिरजू काका....

हर कोई उनके ज्ञान और पढाई का कायल था। जब भी किसी को कोई समस्या होती या सलाह लेनी होती तो बस जुबान पर एक ही नाम आता है बिरजू काका ।

एक बार गांव में ही एक विवाह समारोह के बाद रिसेप्शन पार्टी थी। तकरीबन सभी गांव वाले रिसेप्शन में मौजूद थे, बिरजू काका भी थे .....ऐसे में मंच पर जब बिरजू काका नए जोड़े को शुभकामनाएं देने पहुंचे तो लड़के के पिता ने बिरजू काका से आग्रह किया कि वह अपने ज्ञान से नव जोड़े का उचित मार्गदर्शन करें ताकि इन बच्चों का आनेवाला कल सुखमय बना रहे।

बिरजू काका पहले तो मुस्कुराए फिर जेब से सौ रुपए का नोट निकालकर लड़के को देते हुए कहा - इसे मसलकर फेंक दो।

इस बात को सुनकर लड़के लड़की सहित मंच पर खड़े हर व्यक्ति हैरतअंगेज नज़रों से बिरजू काका को देखने लगे ....आखिर लड़के ने कहा - काका ....रुपये को तो लक्ष्मी जी का रूप माना जाता है, मैं ऐसे कैसे लक्ष्मी जी का तिरस्कार करुं?

तब बिरजू काका बोले - शाबाश.... बेटा यदि तुम लक्ष्मी जी के स्वरुप का सम्मान करते हो तो ध्यान देना तुम्हारे साथ भी एक लक्ष्मी जी का रुप लिए तुम्हारी जीवनसाथी खड़ी है। इसका सदा स्मरण रहे ये अपना परिवार माता पिता भाई बहन सब छोड़ कर तुम्हारे लिए तुम्हारे परिवार के लिए स्वयं को समर्पित करने आई है। लक्ष्मी जी के इस रूप की सदैव इज्ज़त करना सम्मान करना .... लड़के, उसके माता पिता सहित उपस्थित मंच पर सभी के चेहरों पर संतोषजनक मुस्कान आ गई।

इससे पहले बिरजू काका कुछ कहते दुल्हन बनी लड़की काका के पैरों में झुककर बोली - काका ....आप मुझे भी आनेवाले जीवन के लिए कुछ उचित शिक्षा दीजिए।

बिरजू काका ने तुरंत कुछ फूल , धागा और सुई को मंगवाया और लड़की से एक माला बनाने को कहा।

लड़की ने तुरंत माला बनाना शुरु कर दिया और कुछ ही पलों में एक सुंदर माला बनाकर बिरजू काका को पकड़ाते हुए कहा - देखिए काका, सही बनी है न।

बिरजू काका - बहुत सुंदर.... अच्छा इसे ध्यान से देखकर बताओ तुम्हें क्या दिखता है?

दुल्हन बोली - एक सुंदर माला ....

काका - बस...

दुल्हन - जी .....

बिटिया यही है तुम्हारी शिक्षा ....ये जो फूल है ना ये है तुम्हारे इस परिवार में रहने वाले प्राणी ....माता, पिता, देवर, ननद आदि रिश्तेदार ....और बेटा इन सब को जोड़कर रखने वाला, जो कि दिखाई नहीं देता वो है धागा.... जो तुम्हें बनना है ....बेटा सबको एक साथ एक सूत्र मे बांधे रखने का हुनर इस धागे में होता है। बस यही गांठ बांधकर रखना, तुम्हें इस माला को इसमें हर एक फूल को बांधे रखना है तुम्हारा आनेवाला कल ही नहीं वरन वर्षों वर्ष तक की पीढ़ियां सुखद जीवन व्यतीत करेंगी।

सभी ने तालियां बजाकर बिरजू काका का अभिवादन किया.....!!

सुषमा तपड़िया और बनवरीलाल तपाड़िया को विवाह वर्षगांठ पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि,उन्नति, प्रगति, सफलता से भरे सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद।

अयोध्या मालपानी को उत्तम स्वास्थ्य और सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद ।

॥ 卐 ॥

माँ की सीख

फ़ोन की घंटी तो सुनी मगर आलस की वजह से रजाई में ही लेटी रही। उसके पति राहुल को आखिर उठना ही पड़ा। दूसरे कमरे में पड़े फ़ोन की घंटी बजती ही जा रही थी ।

इतनी सुबह कौन हो सकता है जो सोने भी नहीं देता, इसी चिड़चिड़ाहट में उसने फ़ोन उठाया। 'हेल्लो, कौन' तभी दूसरी तरफ से आवाज़ सुन सारी नींद खुल गयी।

'नमस्ते पापा।' 'बेटा, बहुत दिनों से तुम से मिले नहीं सो हम दोनों ११ बजे की गाड़ी से आ रहे हैं। दोपहर का खाना साथ में खा कर हम ४ बजे की गाड़ी से वापिस लौट जायेंगे। ठीक है।' 'हाँ पापा, मैं स्टेशन पर आपको लेने आ जाऊंगा।'

फ़ोन रख कर वापिस कमरे में आ कर उसने रचना को बताया कि मम्मी पापा ११ बजे की गाड़ी से आ रहे हैं और दोपहर का खाना हमारे साथ ही खायेंगे ।

रजाई में घुसी रचना का पारा एक दम सातवें आसमान पर चढ़ गया। 'कोई इतवार को भी सोने नहीं देता, अब सबके के लिए खाना बनाओ। पूरी नौकरानी बना दिया है।' गुस्से से उठी और बाथरूम में घुस गयी। राहुल हक्का बक्का हो उसे देखता ही रह गया।

जब वो बाहर आयी तो राहुल ने पूछा 'क्या बनाओगी।' गुस्से से भरी रचना ने तुनक के जवाब दिया 'अपने को तल के खिला दूँगी।' राहुल चुप रहा और मुस्कराता हुआ तैयार होने में लग गया, स्टेशन जो जाना था।

थोड़ी देर बाद गुस्सैल रचना को बोल कर कि वो मम्मी पापा को लेने स्टेशन जा रहा है, वह घर से निकल गया।

रचना गुस्से में बड़बड़ाते हुए खाना बना रही थी।

दाल सब्जी में नमक, मसाले ठीक हैं या नहीं की परवाह किए बिना बस करछी चलाये जा रही थी। कच्चा पक्का खाना बना बेमन से परांठे सेकने लगी तो कोई कच्चा तो कोई जला हुआ। आखिर उसने सब काम खत्म किया ।

फुरसत की सांस लेते हुए सोफे पर बैठ मैगज़ीन के पन्ने पलटने लगी। उसके मन में तो बस यह चल रहा था कि सारा संडे खराब कर दिया। बस अब तो आएँ , खाएँ और वापिस जाएँ।

थोड़ी देर में घर की घंटी बजी तो बड़े बेमन से उठी और दरवाजा खोला। दरवाजा खुलते ही उसकी आँखें हैरानी से फटी की फटी रह गयी और मुँह से एक शब्द भी नहीं निकल सका।

सामने राहुल के नहीं उसके अपने मम्मी पापा खड़े थे जिन्हें राहुल स्टेशन से लाया था।

मम्मी ने आगे बढ़ कर उसे झिंझोड़ा 'अरे, क्या हुआ। इतनी हैरान परेशान क्यों लग रही है?

क्या राहुल ने बताया नहीं कि हम आ रहे हैं।' जैसे मानो रचना के नींद टूटी हो 'नहीं, मम्मी इन्होंने तो बताया था पर... पर...। चलो आप अंदर तो आओ।' राहुल तो अपनी मुस्कुराहट रोक नहीं पा रहा था।

कुछ देर इधर उधर की बातें करने में बीत गया। थोड़ी देर बाद पापा ने कहा 'रचना, गप्पे ही मारती रहोगी या कुछ खिलाओगी भी।' यह सुन रचना को मानो साँप सूँघ गया हो। क्या करती, बेचारी को अपने ही हाथों से बनाए अध पक्के और जले हुए खाने को परोसना पड़ा। मम्मी-पापा खाना तो खा रहे थे मगर उनकी आँखों में एक प्रश्न था जिसका वो जवाब ढूँढ रहे थे। आखिर इतना स्वादिष्ट खाना बनाने वाली उनकी बेटी आज उन्हें कैसा खाना खिला रही है?

रचना बस मुँह नीचे किए बैठी खाना खा रही थी। मम्मी-पापा से आँख मिलाने की उसकी हिम्मत नहीं हो पा रही थी। खाना खा कर सब ड्राइंग रूम में आ बैठे। राहुल कुछ काम है अभी आता हूं कह कर थोड़ी देर के लिए बाहर निकल गया।

राहुल के जाते ही मम्मी, जो बहुत देर से चुप बैठीं थीं, बोल उठीं 'क्या राहुल ने बताया नहीं था कि हम आ रहे हैं?'

तो अचानक रचना के मुँह से निकल गया 'उसने सिर्फ़ यह कहा था कि मम्मी पापा लंच पर आ रहे हैं, मैं समझी उसके मम्मी पापा आ रहे हैं।'

फिर क्या था रचना की मम्मी को समझते देर नहीं लगी कि मामला क्या है।

बहुत दुःखी मन से उन्होंने रचना को समझाया 'बेटी, हम हों या उसके मम्मी-पापा तुम्हें तो बराबर का सम्मान करना चाहिए। मम्मी-पापा क्या, कोई भी घर आए तो खुशी खुशी अपनी हैसियत के मुताबिक उसकी सेवा करो। बेटी, जितना किसी को सम्मान दोगी उतना ही तुम्हें प्यार और इज़्ज़त मिलेगी।

जैसे राहुल हमारी इज़्ज़त करता है उसी तरह तुम्हें भी उसके माता-पिता और संबंधियों की इज़्ज़त करनी चाहिए। रिश्ता कोई भी हो, हमारा या उसका, कभी फर्क नहीं करना।'रचना की आँखों में आँसू आ गए और अपने को शर्मिंदा महसूस कर उसने मम्मी को वचन दिया कि आज के बाद फिर ऐसा कभी नहीं होगा ।

॥ 卐 ॥

Pavaan Vani

Dear Narayan Premiyo,

Narayan Narayan

Best wishes on the occasion of Tulsi vivah. When I came to know that this time our Satyug team is working on the importance of holy ritual of marriage, I felt a sense of peace deep in my heart because I believe that this is a relationship which if lived with honesty and loyalty, then all other relationships automatically get transformed. It can be easily improved; life can be made seven star. You will learn about all the necessary facts related to marriage from various columns of this issue, but I want to talk to you about one important fact, that is honesty and loyalty.

Loyalty and honesty means being completely devoted to your partner by means of thoughts, words, and behavior. To accept partner's habits, and characteristics as they are. Instead of trying to change them, try to adapt yourself to it. Set an example by being a master of strong character because you are the bearers of the coming generation.

Honesty and loyalty towards your partner are the foundation of your character and they entitle you to a seven-star life full of happiness, peace, health, prosperity, progress, growth, and success.

The foundation of marital relationships is trust. Maintain it and lead a wonderful life.

Rest all good,

R. Modi

CO-EDITOR
Deepti Shukla 09869076902

EDITORIAL TEAM
Vidya Shastry 09821327562
Mona Rauka 09821502064

Main Office
Narayan Bhawan
Topiwala Compound, station road,
Goregaon (West), Mumbai.

Editorial Office
Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

Regional Office

AHMEDABAD	JAIWINI SHAH	9712945552
AKOLA	SHOBHA AGRAWAL	9423102461
AKOLA	RIYA AGARWAL	9075322783
AMRAVATI	TARULATA AGRAWAL	9422855590
AURANGABAD	MADHURI DHANUKA	7040666999
BANGALORE	KANISHKA PODDAR	7045724921
BANGALORE	SHUBHANGI AGRAWAL	9327784837
BANGALORE	SHUBHANGI AGRAWAL	9341402211
BASTI	POONAM GADIA	9839582411
BIHAR	POONAM DUDHANI	9431160611
BHILWADA	REKHA CHOUDHARY	8947036241
BHOPAL	RENU GATTANI	9826377979
CHENNAI	NIRMALA CHOUDHARY	9380111170
DELHI (NOIDA)	TARUN CHANDAK	9560338327
DELHI(NOIDA)	MEGHA GUPTA	9968696600
DELHI (W)	RENU VIJ	9899277422
DHULIA	RENU BHATWAL	878571680
GONDIYA	RADHIKA AGRAWAL	9326811588
GOHATI	SARLA LAHOTI	9435042637
HYDERABAD	SNEHALATA KEDIA	9247819681
INDORE	DHANSHREE SHIRALKAR	9324799502
JALANA	RAJNI AGRAWAL	8888882666
JALGAON	KALA AGARWAL	9325038277
JAIPUR	PREETI SHARMA	9461046537
JAIPUR	SUNITA SHARMA	8949357310
JHUNJHNU	PUSHPA DEVI TIBEREWAL	9694966254
ICHAKARANJI	JAY PRAKASH GOENKA	9422043578
KOLHAPUR	RADHIKA KUMTHEKAR	9518980632
KOLKATTA	SWETA KEDIA	9831543533
KANPUR	NEELAM AGARWAL	9956359597
LATUR	JYOTI BHUTADA	9657656991
MALEGAON	REKHA GARODIA	9595659042
MALEGAON	AARTI CHOUDHARY	9673519641
MALEGAON	AARTI DI	9518995867
MORBI	KALPANA CHOUARDIA	8469927279
NAGPUR	SUDHA AGRAWAL	9373101818
NANDED	CHANDA KABRA	9422415436
NAWALGARH	MAMTA SINGRODIA	9460844144
NASIK	SUNITA AGARWAL	9892344435
PUNE	ABHA CHOUDHARY	9373161261
PATNA	ARBIND KUMAR	9422126725
PURULIYA	MRIDU RATHI	9434012619
PARATWADA	RAKHI MANISH AGRAWAL	9763263911
RAIPUR	ADITI AGRAWAL	7898588999
RANCHI	ANAND CHOUDHARY	9431115477
SURAT	RANJANA AGARWAL	9328199171
Sangli	Hema Mantri	9403571677
SIKAR (RAJASTHAN)	SUSHMA AGARWAL	9320066700
SHRI GANGANAGAR	MADHU TRIVEDI	9468881560
SATARA	NEELAM KDAM	9923557133
SHOLAPUR	SUVARNA BALDEVA	9561414443
SILIGURI	AKANKSHA MUNDHRA	9564025556
TATA NAGAR	UMA ARAWAL	9642556770
ROURKELA	UMA ARAWAL	9776890000
UDAYPUR	GUNWATI GOYAL	9223563020
UBLI	PALLAVI MALANI	9901382572
VARANASI	ANITA BHALOTIA	9918388543
VIJAYWADA	KIRAN JHAWAR	9703933740
VARDHA	RUPA SINGHANIA	9833538222
VISHAKAPATTNAM	MANJU GUPTA	9848936660

INTERNATIONAL CENTRE NAME AND NUMBER

AUSTRALIA	RANJANA MODI	61470045681
DUBAI	VIMLA PODDAR	+971528371106
KATHMANDU	RICHA KEDIA	+977985-1132261
SINGAPORE	POOJA GUPTA	+6591454445
SHRJAH-UAE	SHILPA MANJARE	+971501752655
BANGKOK	GAYATRI AGARWAL	+66952479920
VIRATNAGAR	MANJU AGARWAL	+977980-2792005
VIRATNAGAR	VANDANA GOYAL	+977984-2377821

Editorial

Dear Readers,

Narayan Narayan

As soon as the month of November arrives, there is a lineup of marriage ceremonies. The clarinets of wedding festivities start resonating everywhere. A new relationship begins which is between two people, but the entire family and the entire society is affected by it. What is the bond of marriage? How is it? Team Satyug has chosen this issue of Satyug to convey its thoughts and feelings to the readers regarding how it should be implemented in a better way. This issue of Satyug magazine is presented with detailed information on various aspects of marriage.

May you all live a seven-star life by living your marital relationship in the best possible way. With these best wishes

Yours own,
Sandhya Gupta

To get
important message and information from
NRSP Please Register yourself on 08369501979
Please Save this no. in your contact list so that you can get all official broadcast from NRSP

we are on net

narayanreikisatsangparivar@narayanreiki

Publisher **Narayan Reiki Satsang Parivar,**
Printer - **Shrirang Printers Pvt. Ltd.,** Mumbai.
Call : 022-67847777

|| Narayan Narayan ||

Narayan Reiki Satsang Parivar emphasizes closeness in family relationships. Marriage is a relationship which is the basis of all mutual relationships. In marriage, a man and a woman live together for a lifetime, filled with understanding, partnership, love, respect, honor, and care, and carry forward their progeny, carry forward their culture, and bring advancement in the society.

According to Indian scriptures, marriage is a sacred bond which is the union of two souls and a bond for seven births. A spiritual bond that fills you with the qualities of companionship, security, love, respect, and honor.

Marriage is not just a relationship between a man and a woman, it is a bond between two families, two cultures, two civilizations where two families move together on the path of progress and development.

Narayan Reiki Satsang Parivar is an excellent platform to teach the principles of family and to live the institution of marriage in the best way.

Marriage broods a social and cultural relationship in which two people join each other and share a life together. It is a deep and lasting relationship based on love, dedication, and partnership.

What is most needed for a successful and meaningful marriage relationship is the spirit of 'In giving we believe'. When both the partners are filled with the feeling of giving their best to each other and to each other's family, then marriage becomes a very beautiful experience. Then not I, but we and our family become important. For the success of marriage, it is necessary that first of all we fill ourselves with the feeling, - "My partner is the best" Accept your partner as it is with his/ her characteristics.

A husband should say this lovely mantra to his wife daily, **'Thank you for coming into my life. You are the form of Lakshmi, you are the Annapurna of my house, you are the form of Saraswati ji. Because of you I am a rich, glorious, and wonderful person. I am living a life full of great achievements. ' Along with this, be grateful for what you have achieved today and also include what you want to achieve in the future. After saying everything, say this lovely mantra, 'I love you, I like you, I respect you, Narayan bless you'.**

Similarly, the wife should also say to her husband every day**, 'Thank you for coming into my life, because of you I am living a life full of all the seven happiness, I am living a life full of blessings, growth, and abundance. I love you; I like you: I respect you: Narayan bless you. Also speak about the specialty of your husband. My life has become so beautiful because of that particular specialty of yours.** When both the partners say such beautiful and healthy positive sentences to each other, then it hardly takes any time for life to become seven-star. Instead of trying to change your partner, try to make yourself compatible with him. Understand each other's thoughts and feelings and let them remain in accordance as they are. Remember that both the people involved in the marriage, both

the families, have their own personality, their own habits, their own values, their own food habits, which may be different from each other. Respect that and learn from each other. If you have to change some of your values or habits, then change them with the feeling of- "I am learning something new" and not merely for adjustment. Keep your thoughts, speech, and behavior positive because it is your moral responsibility, and you are taking the family and society forward by giving birth to a new generation.

If ever something is contrary to your liking, then thank Narayan that this situation has been brought before you by the Supreme Father and is making you capable of finding compatibility in opposites. In such times, remember your basic mantra of - I can manage, I can handle, I can afford. Give your in-laws and father-in-law the status of your parents. Respect them, take care of them in the same way as you take care of your parents. Our mother-in-law and father-in-law are the incarnation of God on this earth. Whether we do puja or not, if we treat our in-laws lovingly, take care of their needs and take care of them, then we become entitled to the best results what we get bh doing puja."

Respect is a strong link that binds a marriage relationship. Always respect each other. Never let ego come forward in mutual relationships because your partner's respect is your respect and your partner's insult is your insult."

Sometimes it will happen in the family that you have more responsibilities, at that time instead of getting upset or angry, express gratitude that you are capable of handling all the responsibilities well, due to which the life of all the family members becomes easier. In a marriage, both the partners come from different families. Their food habits, lifestyle and customs may be different. In case of mutual disagreement, do not hold back on things. Understand that everyone has their own perspective. Both of you have lived in different environments for years, so it is natural to have differences of opinion. Sit down and talk about differences of opinion, try to resolve differences through mutual understanding, say to each other, 'You go a little, we go a little, but let's go together.'" Rise above me and follow the concept of our vision. I am alone but I am always surrounded by many. The feeling of we brings a sense of security, a feeling of affection, makes you and your partner feel that we are one and will share happiness and sorrow together. Be devoted to each other and share everything with each other. This habit of yours will help you at every step of life." In this era of development, wives too have started working outside the home. In such a situation, the responsibility of both the partners as well as the family members increases. Help each other as much as you can, work together, do not blame each other. Avoid anger and complaints. Keep your marriage healthy, safe and happy by working together with love. Marriage is a unique and special moment of starting a new life. It binds two strangers lives together and gives them a chance to walk together in all the hues of life. Marriage is a complete and prosperity filled relationship because of the love, dedication and partnership involved in it.

||नारायण नारायण||

॥ 卐 ॥

Wisdom Box
(Glimpses of Satsang)

Marriage is the foundation of all intimate relationships. To make marriage relationships work in the best manner, it is very important to keep some things in mind. Some such things through Didi's favorite characters

Mrs. Sudha Murthy

Mrs. Murthy writes that once she went to a family wedding with her family. There, she met all the family members, friends, and acquaintances. They all sat down in a group to talk. They all started discussing social service, philanthropy and doing something for our country. Someone said that those who have lot of time can do social service. Someone said those who have lot of money and does not have any special responsibilities at home and has no hobbies involve themselves in social service. Someone said that doing social service means paying off the debt of the previous life.

Mrs. Murthy wrote very beautifully that she has a strong feeling that those who are her family members and friends, their intentions are never wrong.

That is why she never gets hurt or upset by their words.

Mrs. Murthy further said that in her long journey of social service, she has seen many people, that no matter what their own circumstances were, they are always ready to help others. In "Chennai Social Service Society" there were many who were very poor, many were middle class and yes there were many rich people also who were engaged in social service. Mrs. Murthy further wrote that to do social service, time and money are needed but the most important thing is the feeling and desire to serve society.

On people's request, Mrs. Murthy gave some examples –

Example 1:

Mrs. Sudha Murthy writes…. "You must have gone to Badami Railway Station, which is in the town." There are huge dense Neem trees on both sides of the road. It was years ago that an ordinary person had a desire to do something for his country and society. Since he did not have much money or energy, he brought small neem saplings and planted them on both sides of the road near the station. In those days, there was so much problem of global warming, it rained heavily.

Those small Neem plants took the form of dense trees and today they provide

cool shade to the people passing by and no one even knows the name of that person. Mrs. Murthy writes further, she asked her group, isn't this charity? Isn't this a social service? When Sudha ji asked, some people nodded in "yes."

Example 2:

Dr. Sridhar, who was settled abroad 31 years ago, left his settled job, and returned to his hometown Bangalore and started living with his family in a two-room rented house. His routine was that he used to open dispensary from 4pm to 6 pm. Every day served people; he did not take money for treatment from any patient.

Mrs. Murthy further writes, one day she asked him why he did not stay abroad. On this, Dr. Sridhar said that he had a dream to give back something to society and to his own country. His children encouraged him, his wife motivated him, so he was able to fulfill his dream. Sudhaji said Family support is very important to do social work.

Raj Didi said that the universe always manifests our wish. The Universe does not differentiate between small or big wish.

The Universe just says "Tathaastu" that is "Granted".

Didi said you pray for both your small and big wishes alike you may have to increase a bit of quantity for your priority wish. When your wish is small, you have a feeling that this is a minor wish and when you pray, it will be manifested soon. That strong feeling along with prayers helps to manifest that wish.

Now the question comes why our priority wish is not manifested soon. Why does the priority wish take time to be manifested even after many prayers.?

Raj Didi further said that you pray a lot for your priority wish. Whenever you pray and give affirmations, that wish comes near you. When you give positive affirmations many times the wish moves near you. You gave positive affirmations and also did prayers still wish not fulfilled. Why...?? Always keep in mind that when we pray, we say affirmations and chant, if we speak negative words, condemn someone, or blame someone. If we do any of the above, our wish moves away from us. We will have to do more prayers to fulfill it. If you gossiped about someone condemned him/her the Universe might ignore it but if you hurt someone with your words. The Universe immediately captures that, you have hurt him now, you will

also have to suffer.

What precautions do you have to take so that your priority wish is completed.

Raj Didi further said that when you observe fast on Ekadashi, you do not eat grains.

Raj Didi gave the example and said that she remembers very well, when she was a little girl that time Santoshi Maa fast was very prevalent, ladies used to observe fast to please Santoshi Maa. One rule during the fast was that when someone observes fast, they have to avoid sour food. The women observing that particular fast would neither eat nor even touch anything sour.

Raj Didi said that if you have to complete your wish you need to avoid all of the negative things, complaints, gossiping, blaming, jealousy, etc.

When you give affirmations, chant, and also say negative words or hurt someone, then the universe will not manifest your priority wish. Remove negative things from your life completely, like in Ekadashi you avoid grains similarly you should avoid negative things if you want your wish to be manifested.

Why wasn't your big wish completed, you had worked for it.? When you hurt someone, you receive momentary joy, but you do not realize that you got momentary happiness but the real joy you would have experienced on fulfillment of your priority wish moved away from you, so you have to focus more and more on positive behaviour.

Easy and simple way to fulfill your wish as soon as possible: -

In such a situation, an easy way to fulfill your wishes for the welfare of all: - Take **Ram Naam Lekhini booklet** which can be easily obtained from our office and at very low prices. If you do not have this booklet, then you can use any ordinary Take the booklet. Take a rule of half an hour that I will do the process of writing Ram's name in this booklet before sleeping at night to fulfill my wish. Now, just before sleeping, keep saying your wish and keep writing Ram Ram. After completing the writing, go to sleep. Don't talk to anyone or check your phone.

Youth Desk

The lovely bond of marriage – its importance in our culture

The sacred bond of marriage is a bond full of love, taking seven vows and circumambulations around the fire and living together for life. In Hindu religion, fire is considered sacred and who can be a greater witness than fire to unite a man and a woman in matrimony and to take seven circumambulations and seven vows.

The basic purpose of marriage is stability in married life, depth of relationships, sharing joys in life and development of the family. It is a social ritual which means establishing a permanent relationship between two people through the union of two families. Marriage gives two people a feeling of being United as partners.

Marriage is the foundation that establishes a home and forms the foundation of child rearing and economic cooperation and social responsibilities. From the social point of view, marriage means giving birth to children and thereby maintaining the continuity of the society. Hindu marriage is a religious rite.

From the above statement, all the youth must have become aware of this great tradition of India and its importance. Before marriage, you have every right to know each other very well, but once you get into this bond, remain completely devoted to each other**. Follow the seven vows taken at the time of marriage in words and spirit.** Become each other's strength by accepting each other's shortcomings.

This bond is the only bond where you play multiple roles for each other. Sometimes, like a wife, a woman devotes her body and mind to her husband, sometimes like a mother, she pampers and understands all your feelings, sometimes like a sister, pokes you, sometimes like a daughter, gets her things done and sometimes like a permanent friend, she treats you like a friend. Every happiness and sorrow is shared.

A man also becomes a husband and hands over all the rights of his life to a woman, sometimes he pampers you like a father, sometimes he protects you like a brother, just like a shield, sometimes he shares everything in his mind like a true friend.

Nowadays it is being seen that husband and wife are not playing their roles honestly, many children do not want to get tied in the bond of marriage and even if they get tied, they reach the point of divorce due to their ego. The word divorce or talaq has not been created in Hindu culture. Our culture teaches us dedication, companionship, cooperation, and companionship for seven births. All your seven births take place in this life, that is, living together facing multiple circumstances. **Keep this religious tradition of your culture alive and make it glorious.**

||नारायण नारायण||

॥ 卐 ॥

Children's Desk

The issue this time team Satyug decided to focus upon is marriage and culture.

Here in the children's desk, we will cover how important is to know about our culture.

Our culture is the pulse of our vibrant society. It is our culture, the values, the virtues which have been passed on to us generations from generation that define our true self. It us our unique identity. Culture represents our history and the collective achievements and aspirations of all generations. When we talk of culture it fosters a sense of community and unity making us feel a part of the bigger Vasudeva Kutumba.

It is our responsibility that we need to understand and preserve our culture by keeping alive and following the traditions and the ritualistic practices passed on to us through generations.

Every generation has its own individualistic impressions. We can include those in the traditions which we follow, making things easier and beautiful.

An example of traditional appeal is the Diwali Sneha Milan followed by all societies wherein all meet at one platform to wish each other. Earlier it was practice visiting people during Diwali. In this way we connect to all near and dear, and in today's fast moving multi-tasking culture, this is a brilliant idea.

Not only Diwali but now a days many festivals are celebrated in this fashion wherein culture meets the generation next.

In today's children and in youth if the WHY factor is answered satisfactorily, they are ready to follow the traditions and imbibe the culture passed on from generations. Many spiritual organizations like the Art of Living, the Isha Yoga and NRSP are working towards getting generation Next to merge with old cultures thus strengthening our cultural roots.

The ritualistic practices in our marriages too have great significance. In Hindu culture the marriage is a union of two families, thus strengthening ties and relationships.

We at NRSP try to enlighten both children and youth about the secrets behind our so many religious and cultural activities to promote cultural enhancement in each one of us.

Under The Guidance of Rajdidi

In this section, we convey to our readers those confessions and sharing's, that have brought about a change in the lives of satsangis who followed Didi.

The circumstances of our lives are the results of the words used by us: -

Whatever words we use, get deposited in the universe and keep showing their impact from time to time. Below is an eye-opening confession, which is going to make satsangis realize that the words that are pronounced casually or jokingly come back and one has to pay the price of that.

Here is the confession of a lady, who is suffering from mouth cancer. Years back, when her husband had habit of chewing tobacco, she used to tell her husband to better leave chewing tobacco else he would get cancer and she would also get from him. Result: Today, she is suffering from mouth cancer.

Whenever she visited any event or wedding, she would stuff her plate with food, which ultimately went to waste and had to be thrown in the dustbin. Result: Because of the cancer, her mouth has developed a big hole and whatever she eats, comes out of that hole.

Her elder daughter is a special child. She used to get annoyed with her and used to keep telling her husband, "Let three of us eat poison and send our son to brother-in-law. Result: Owing to her ill health and daughter being a special child, her son is forced to stay at her elder and younger brother-in-law's place.

Earlier, she disliked extended family members visiting her home. Result: Now Special child daughter hits everyone, because of which no family members can visit them even if they wish to.

One of her paternal in law was alone and it was decided that she will stay with each brother turn wise. When it was her turn, she used to leave her in strong sunlight and went away, as her daughter used to hit her. Result: Now her daughter is also being taken from one home to another, owing to her health condition.

She used to speak negative with her sisters in law who also used to reply back negatively. Now they are also suffering in the way of taking care of her special child daughter.

She used to find faults in others and speak negative words and hurt them. Result: Because of her health, and special child daughter, everyone in the family remains sad and unhappy.

Her behaviour with family members was not nice. She asks for pardon for all her negative karmas.

Be Aware of your words

1. In a fit of anger, she yelled at her helper, “what will happen when I die? Now she’s on bed within a fortnight.

2. The alliance of elder brother in law’s daughter was long awaited. She used to think, in this age she is not expected to find a good match. Result is, she has found a very decent alliance while her own daughter’s match is Narayan help.

She begs pardon from Narayan.

Giving back to society

A small-town parlor satsangi lady shared that she did the bridal makeup of an underprivileged daughter and in return took nothing but the blessings. She said that she has learnt from Raj Didi that there resides Narayan in every human being. The righteous way of living life is by helping others through whichever way possible.

Self-Improvement through Satsang.

I saw Didi’s video that your smile has the power to change your fate. I had a strained relationship with my-in-laws. Whenever I used to visit India from the US, I never stayed for more than 2 hours because of the spat that used to occur in the meantime. This time, when I landed in India, I was determined to stay positive and spread smiles only. I maintained a smile, spoke lovingly with everyone. This time I stayed with my in laws for about 4 hours and for the first time, my father in law asked me to stay a little longer. Mother-in-law also spoke nicely.

Children take good values from Satsang.

8 years old granddaughter has learnt the importance of food from Satsang. She never throws food, always takes a little quantity in her plate. While attending an event or wedding if something is left on the plate, she wraps that in a paper napkin and while on the way back home, she gives that leftover food to stray dogs and cats.

Inspirational Memoirs

A Father's letter to a daughter

Dear daughter,

Am sure you are happy in your in-laws' house...!

The whole society is going to celebrate the festival of Karawa Chauth, and all the married women will keep a fast for the long life of their husbands.

This is your first Karawa Chauth after your marriage and perhaps you will also observe a fast like other women.

Some thoughts came to my mind on this subject, so I am writing a letter to you.

Daughter, if you also think that just by observing fast, your husband's life will be longer, then your thinking is also wrong like other women.

If you really wish for the long life of your husband, then pray to God and ask God that he always guides your intellect on the path of goodness, truth, religion, and purity, and that your mind never wanders in restlessness. Go, Love your husband with all your heart. If you want his long life, then keep his mind calm.

Strengthen relationships with everyone in the family and do not fill your husband's mind with criticism about your in-laws. Keep your conduct and behavior as per your husband's wish and the way he likes.

Do not commit any wrongdoing by hiding it from him, do not speak ill of your husband in public or disrespect him, if there is any difference of opinion then resolve it amongst yourselves.

Do not indulge in any indulgence secretly from your husband. If any problem arises in the family, solve it together; otherwise there will be mistrust and fight between you and the life of both of you will not be happy and health also will be affected. Thinking about long life would be futile.

Daughter, always keep your nature calm, you will easily solve even the most difficult times with your calm spirit.

Never lose your patience. Your vision, your speech, your conduct should be suitable for your husband and should be dear to him.

॥ 卐 ॥

Consider your husband as your master and protector and do not have feelings of love for anyone other than him.

The real fast is to follow these teachings of mine with determination.

Blessings for happiness

Your father,
Blessings on the occasion of Karwa Chauth.

Greetings

Everyone in the village respected him, from young children to elderly...his name is Birju Kaka....

Everyone was impressed by his knowledge and studies. Whenever anyone had a problem or needed guidance, only one name came to mind - Birju Kaka.

Once there was a reception party after a marriage ceremony in the village. Almost all the villagers were present in the reception, Birju Kaka was also there... So, when Birju Kaka came on the stage to wish the new couple, the boy's father requested Birju Kaka to use his knowledge to give proper advice to the new couple. Provide guidance so that the future of these children remains happy.

Birju Kaka first smiled and then took out a hundred rupee note from his pocket and gave it to the boy and said - crumple it and throw it away.

Hearing this, everyone standing on the stage, including the boys and girls, started looking at Birju Kaka with surprised eyes.... Finally, the boy said - Kaka... Rupees are considered to be the form of Lakshmi ji, how can I treat Lakshmi ji like this? How can I show disrespect?

Then Birju Kaka said - Well done.... Son, if you respect this form of Lakshmi ji, then pay attention that your life partner is also standing with you in the form of Lakshmi ji.

Always remember that she has left her family, parents, brothers, and sisters and has come to dedicate herself to you for your family. Always respect and honor this form of Goddess Lakshmi.... Satisfied smiles appeared on the faces of everyone present on the stage including the boy and his parents.

Before Birju Kaka could say anything, the bride-to-be girl bowed at Kaka's feet and said - Kaka...please give me some proper education for my future life.

Birju Kaka immediately ordered some flowers, thread and needle and asked the girl to make a garland.

The girl immediately started making the garland and within a few moments she made a beautiful garland and handed it to Birju Kaka and said - Look Kaka, it is made correctly.

Birju Kaka - Very beautiful.... ok look at it carefully and tell me what do you see?

The bride said – A beautiful garland....

Uncle-Enough...

Bride - Yes...

Daughter, this is your education...this flower is the living beings in your family...mother, father, brother-in-law, sister-in-law etc. relatives...and the son is the one who keeps them altogether, who What is not visible is the thread...what you want to become...beta, this thread has the skill of keeping everyone together in one thread. Just keep this knot tied, you have to keep this garland with every flower tied in it, not only your tomorrow but also the generations for years will live a happy life.

Everyone greeted Birju Kaka with applause...!!

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Sushma Taparia and Banwarilal Taparia on their Anniversary (30th November) for a seven-star life and years of togetherness.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Ayodhya ji Malpani for good health and a seven star life

॥卐॥

Lesson

She heard the phone ringing but due to laziness she remained lying under the quilt. Her husband Rahul finally had to get up. The phone in the other room kept ringing.

Who can be calling at such an early hour disturbing our sleep- It was in this irritation that Rahul picked up the phone. “Hello, who is that?” He became fully wide awake after hearing the voice at the other end.

“Hello Papa.” “Son, I haven’t met you for a long time, so both of us are coming by 11 o’clock train. After having lunch together, we will be returning by the 4 o’clock train. Ok.” “Yes Papa, I will come to pick you up at the station.”

After hanging up the phone and coming back to the room, he told Rachna that mom and dad are coming by 11 o’clock train and will have lunch with us.

Still sleeping under the quilt Rachna’s temper suddenly skyrocketed. “No one lets you sleep even on Sunday. Now cook food for everyone. You all have made me a complete maid.” Rachana got up angrily and entered the bathroom. Rahul kept looking at her dazed.

When she came out, Rahul asked, “What will you make?” Angry Rachna replied sarcastically, “I will cook myself up.” Rahul remained silent and started getting ready with a smile to go to the station.

After some time, he left the house after telling a still angry Rachna that he was going to the station to pick up his parents.

Rachna was cooking food all the while muttering angrily.

The ladle was being used without caring whether the salt and spices in the pulses and vegetables were correct or not. After preparing the food, some of which were still raw, she reluctantly started making the parathas, some of which were raw, and some burnt. At last, she finished all the work.

Taking a sigh of relief, she sat on the sofa and started flipping through the pages of the magazine. All the time it was going on in her mind was that they had ruined the whole Sunday. Now just come, eat, and go back.

After some time, the doorbell rang, and she got up very reluctantly and opened the door. As soon as the door opened, her eyes widened with surprise and not a

single word came out of her mouth.

Standing in front were not Rahul's parents but her own, whom Rahul had brought from the station.

Mom came forward and shook her up, "Hey, what happened? Why are you looking so surprised and upset?

"Didn't Rahul tell you that we are coming?" As if Rachna had lost her sleep, "No, mummy, he had told me but.... Rrr... rrr. Come on, you come inside." Rahul could not help smiling.

Some time was spent in talking about here and there. After some time, Papa said, "Rachna, will you keep chatting or will you feed me something?" Hearing this, Rachna looked petrified as if she had smelt a snake. What could she do? The poor girl had to serve half-cooked and burnt food cooked with her own hands. Mom and dad were eating food but there was a question in their eyes for which they were looking for an answer. After all, what kind of food was their daughter, who cooks such delicious food, feeding them today?

Rachna was just eating food sitting with her face down. She couldn't muster the courage to make eye contact with his parents. After having food everyone came and sat in the drawing room. Rahul said he had some work and will come right away and went out for a while.

As soon as Rahul left, mother, who had been sitting silent for a long time, spoke up, "Didn't Rahul tell you that we are coming?"

Then suddenly Rachna said, "He just said that mom and dad are coming for lunch, I thought it was his mom and dad were coming."

It did not take long for Rachna's mother to understand what the matter was.

With a very sad heart she explained to Rachna, "Daughter, whether it is us or his parents, you should respect both equally. Not only parents, if anyone comes home, happily serve them according to your capacity. Daughter, the more you respect someone, the more love and respect you will get.

Just as Rahul respects us, you should also respect his parents and relatives. No matter what the relationship may be, ours or his, never make any difference." Tears welled up in Rachna's eyes and feeling embarrassed, she promised her mother that after that day, this would never happen again.

GOLDEN SIX

1) Prayer -Thank you Narayan for always being with us because of which today is the best day of our life filled with abundance of love, respect, faith care, appreciation, good news and jackpots . Thank you Narayan, for blessing us with infinite peace and energy. Narayan, Thank you for blessing us with abundant wealth which we utilize. We are lucky and blessed. With your blessings, Narayan, every person, place, thing, situation, circumstances, environment, wealth, time, transport, horoscope and everything associated with us is favourable to us. We are lucky and blessed .Thank you Narayan for granting us the boon of lifelong good health because of which we are absolutely healthy. Thank you Narayan with your blessings we are peaceful and joyous, we are positive in thoughts, words and deeds and we are successful in all spheres of life. Narayan dhanyawad.

2) Energize Vaults - Visualize a rectangular drawer in which you store your money. Visualize Rs 2000 notes stacked in a row, followed by Rs 500/- , Rs100/- , Rs 50/-, Rs20/- Rs10/- and a silver bowl with various denomination of coins. Now address the locker 'You are lucky, the wealth kept in you prospers day by day.' Request the notes "Whenever you go to somebody fulfill their requirements, bring prosperity to them and come back to me in multiples." Now say the Narayan mantra, "I love you, I like you, I respect you, Narayan Bless you" and chant Ram Ram 56

3) Shanti Kalash Meditation – Visualize a Shanti Kalash (Peace Pot) above your crown chakra. Chant the mantra" Thank You Narayan, with your blessing I am filled with infinite peace, infinite peace, infinite peace. Repeat this mantra 14 times."

4) Value Addition - Add value to cash and kind (even food items) you give to others by saying Narayan Narayan or by saying the Narayan mantra.

5) Energize Dining Table/ Office table - Visualize the dining table/ office table and energize it with Shanti symbol, LRFC Carpet, Cho Ku Rei and Lucky symbol. Give the message that all that is kept on the table turns into Sanjeevini.

6) Sun Rays Meditation - Visualize that the sun rays entering your house is bringing happiness, peace, prosperity, growth, joy, bliss, enthusiasm and health sanjeevini. Also visualize your wishes materializing. This process has to be visualized for 5 minutes.

Finest Pure Veg Hotels & Resorts

The Byke

A HOTEL RETREAT

EAT GREEN • STAY EVERGREEN

Our Hotels : Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

THE BYKE HOSPITALITY LIMITED

Shree Shakambhari Corporate Park,Plot No.156-158,

Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.

T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com